Millennium Post 02-May-2021

Depleting water level in Yamuna may affect supply, hit hospitals'

OUR CORRESPONDENT

NEW DELHI: Delhi Jal Board (DJB) Vice Chairman Raghav Chadha on Saturday said depleting water level in the Yamuna river is leading to a shortage of drinking water in several parts of Delhi and may also affect hospitals in the city in the coming days. He urged Haryana Chief Minister Manohar Lal Khattar to release more raw water into the Yamuna so that sufficient drinking water is available for the national capital.

The water level at Wazirabad pond has dipped to 667.20 feet from the normal level of 674.5 feet as Haryana has been releasing less raw water into the river, Chadha said.

The water from Wazirabad pond is drawn for treatment at Wazirabad, Okhla and Chandrawal treatment plants.

"The water production at the three WTPs has reduced due to depleting water levels in the Yamuna. This is leading to a shortage of water supply in several residential areas. It can also affect hospitals in Delhi in the coming days. Please help Delhi in times of coronavirus," he tweeted in Hindi. Drinking water supply has been hit in parts of Central Delhi, North Delhi, South Delhi, West Delhi due to decreasing water levels in the river, the DJB said.

Telangana Today 02-May-2021

Thunderstorm warning for State

CITY BUREAU
Hyderabad

Thunderstorms accompanied with lightning, gusty winds and hailstorms are very likely to occur at isolated places across Telangana. — Photo: Anand Dharmana

What started as a hot and dry morning, turned into a cloudy afternoon and later a windy evening. The weather on Saturday kept changing as the day progressed with some localities witnessing light showers towards late evening.

The sun was overcast since the afternoon, resulting in the temperature across the city to drop. While the maximum temperature of 37.2 degrees Celcius was recorded at Narayanguda, areas surrounding BHEL witnessed pleasant weather throughout the day at 23.3 degrees Celsius. Meanwhile, the Indian Meteorological Department (IMD), Hyderabad has also issued a warning for thunderstorms at isolated places in the State over the next five days.

(SEE PAGE 2)

Navbharat Times 02-May-2021

यमुना में हरियाणा छोड़ रहा कम पानी, दिल्ली में बढ़ा संकट: DJB

■ विशेष संवाददाता, नई दिल्ली

दिल्ली जल बोर्ड के वाइस चेयरमैन राघव चड्ढा ने कहा है कि यमुना में गिरते जलस्तर की वजह से दिल्ली के कुछ हिस्सों में पानी की किल्लत बढ़ रही है। इसका असर आने वाले दिनों में शहर के अस्पतालों में भी दिखाई पड़ सकता है। उन्होंने हरियाणा के सीएम मनोहर लाल खट्टर से कहा है कि यमुना में पर्याप्त कच्चा पानी छोड़ें, ताकि राजधानी को पीने के लिए पर्याप्त पानी मिल सके।

> राघव चड्ढा ने कहा, सेंट्रल दिल्ली, नॉर्थ दिल्ली, साउथ दिल्ली और वेस्ट दिल्ली में पानी किल्लत हो रही है

राघव ने कहा कि वजीराबाद पॉन्ड का पानी का स्तर 674.5 फीट से गिरकर 667.20 फीट रह गया है। इसकी वजह है कि हरियाणा निर्धारित मात्रा से कम कच्चा पानी यमुना में छोड़ रहा है। पानी का स्तर गिरने से तीन वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट

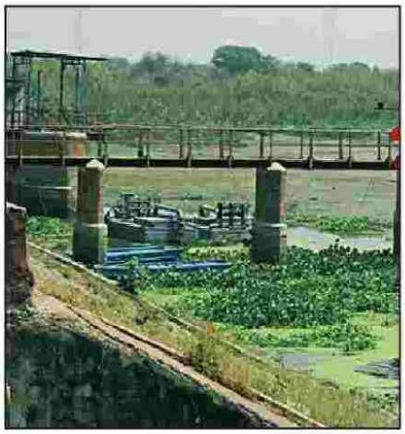

वजीराबाद, ओखला और चंद्रावल पर असर पड़ता है। राजधानी के इन तीनों प्लांट में पानी का उत्पादन कम हो गया है। इससे कुछ इलाकों में पानी की काफी किल्लत हो रही है। आने वाले दिनों में इसका असर कुछ अस्पतालों पर भी पड़ सकता है। कोरोना वायरस के इस कठिन दौर में राघव चड्ढा ने हरियाणा से दिल्ली के लोगों की मदद करने को कहा है। उन्होंने बताया कि सेंट्रल दिल्ली, नॉर्थ दिल्ली, साउथ दिल्ली, वेस्ट दिल्ली आदि में पानी का संकट बढ़ रहा है।

File No.T-74074/10/2019-WSE DTE
Navbharat Times 02-May-2021

अब तो सुन लो जल की कल-कल

TIMES EVOKE

दुनिया के बहुत-से देश जल संकट महसूस कर रहे हैं। धरती का 70 फीसदी हिस्सा पानी से ढका होने के बावजूद यह हाल है। इसमें से 2.5 फीसदी ही मीठा पानी है और बाकी खारा। इस मीठे पानी में से सिर्फ 1 फीसदी ही आसानी से मिलता है। दरअसल धरती का 0.007 फीसदी पानी ही करीब 8 अरब लोगों को मिल पाता है। आबादी बढ़ी है और दुनियाभर में पानी की खपत बढ़कर तीन गुना हो गई है। यही वजह है कि करीब 1 अरब लोगों को पीने के लिए साफ पानी नहीं मिल पाता है और करीब 2 अरब लोगों को पानी की कमी झेलनी पड़ती है। एक अनुमान है कि साल 2030 तक आधी दुनिया को पानी की भारी कमी का सामना करना पड़ेगा। जलवायु परिवर्तन और अनियमित बारिश होने से यह संकट बढ़ने की आशंका है। पानी की कमी का असर इंसानों पर ही नहीं होता, मीठे पानी में रहने वाले जीव-जंतु भी इससे प्रभावित होते हैं। इन जीवों में साल 1970 के बाद से दो-तिहाई तक कमी आई है। अगर धरती पर पानी की सही व्यवस्था की जाए तो इस स्थिति को संभाला जा सकता है।

'कुदरत को भी अपने लिए मीठा पानी चाहिए'

सांद्रा पोस्टल ग्लोबल वॉटर पॉलिसी की डायरेक्टर हैं। **सृजना मित्रा दास** से इस खास बातचीत में वह बता रही हैं कि दुनिया के सामने मीठे पानी की चुनौती कितनी बड़ी है और कैसे इस समस्या को हल कर सकते हैं।

Q पानी के मुद्दे पर आपने जितना काम किया है उसका मुख्य विषय क्या है?

A मेरी रिसर्च का बड़ा हिस्सा इस बात पर केंद्रित है कि हमें एक समृद्ध समाज कैसे मिले और साथ ही हम जल चक्र को सुधारकर फिर पहले जैसा किस तरह से बनाएं। कई सदियों से हम अपने फायदे के लिए पानी के चक्र के साथ छेड़छाड़ करते रहे हैं। पानी जमा करने के लिए बांध बनाए, पानी का बहाव मोड़ दिया और बाढ़ पर काबू पाने की कोशिश की। इसके फायदे हुए लेकिन जल चक्र बिगड़ गया। हवा, धरती और समुद्र में पानी का कुदरती तौर पर आना-जाना प्रभावित हो गया, जबकि यह इंसानी समृद्धि के लिए जरूरी है। हम कुदरत के खिलाफ नहीं, उसके साथ काम करके भी बहुत कुछ पा सकते हैं। इससे बाढ़ का आना कम किया जा सकेगा और दलदली जमीन को भी बचा सकेंगे। साथ ही मछलियों, पक्षियों और जंगली जीवों के लिए आवास भी सुरक्षित रहेंगे।

Q आप कई इकोसिस्टम की बात करती हैं, ऐसा क्यों?

A इकोसिस्टम की सेहत और जैव विविधता को बचाना इंसानों को बचाने के लिए जरूरी है। हम हमेशा यह नहीं देखते कि कीड़े, मछलियां या पानी व जमीन दोनों पर एक साथ रहने वाले जीव, पक्षी और जीवन के बाकी रूप कैसे घट रहे हैं, लेकिन ऐसा हो रहा है। वर्ल्ड वाइल्डलाइफ फंड के मुताबिक, साल 1970 के बाद से, दुनिया में मीठे पानी में रहने वाले जीवों की तादाद में 83 फीसदी की कमी आई है। 50 साल पहले के हर 100 मेंढकों और मछलियों में से केवल 17 ही बचे हैं। ऐसा लगता है कि जैसे पलक झपकते ही यह नुकसान हो गया।

Q आप जल संसाधन जैसे शब्द का इस्तेमाल क्यों नहीं करतीं?

A मुझे लगता है कि भाषा महत्वपूर्ण नहीं होती। करीब 30 साल पहले मैंने यह तय किया था कि मैं इस शब्द का इस्तेमाल नहीं करूंगी। पानी का सबसे अहम काम धरती पर जीवन बचाए रखना है। यह कोयले और तेल की तरह नहीं है, मीठे पानी की अहमियत उससे कहीं ज्यादा है। यह खुद जीवन का स्रोत है।

Q आप कहती हैं कि जलवायु परिवर्तन ज्यादातर पानी की वजह से होता है?

A जलवायु परिवर्तन की सबसे बड़ी वजह वातावरण में ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन होने से गर्मी बढ़ना है। जब वातावरण गर्म होता है तो ज्यादा नमी सोखता है, सूखी जगह बेहद सूख जाती हैं और दलदली जगह ज्यादा दलदली हो जाती हैं। हम भयानक बाढ़, सूखा और बारिश जैसी घटनाएं देख रहे हैं। तापमान बढ़ने से ग्लेशियर पिघल रहे हैं। इसका असर भारत पर पड़ेगा जो ग्लेशियर पिघलने से बहने वाली नदियों पर निर्भर है। भयंकर बाढ़ से बांध टूटने का डर होता है। पश्चिमी अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में जंगल की आग का डर होता है, वहां भी पीने के पानी का संकट डराता है। साल 2017 में बड़े आंधी-तूफान आए, अमेरिका को बेतहाशा नुकसान हुआ। खासकर समुद्री तूफान और जंगली आग से।

Q कौन-सी नीतियां यह नुकसान घटा सकती हैं?

A हमें मिलकर जल चक्र की मरम्मत और पानी के भंडार बचाने का काम करना होगा। चीन, भारत, पाकिस्तान और अमेरिका में पानी के भंडार घट गए हैं जबकि ये सबसे बड़े सिंचाई वाले क्षेत्र हैं। यहां सूखे के दौरान भूजल बहुत काम आता है। हमें पंपिंग कम करके उन जगहों को फिर रिचार्ज करना होगा। भारत में सूखा और बाढ़ दोनों बहुत आते हैं। ऐसे में यहां नदियों को उनके कुदरती बहाव से जोड़ने की नीति बनानी चाहिए। जब बाढ़ आएगी तो उसका खतरा कम होगा और भूजल भंडार बढ़ेगा।

'प्राचीन भारत बारिश की हर बूंद बचा लेता था'

सुनीता नारायण सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट की डायरेक्टर जनरल हैं। यहां वह बता रही हैं कि प्राचीन भारत का पानी का सिस्टम कितना अनूठा था। हमें उसे फिर जीवित करना होगा।

भारत में पानी की स्थिति काफी जटिल है। इसकी कमी साफ दिखती है। यहां जल संकट की वजह से जंग होने तक का डर रहता है। यह डराने वाली तस्वीर है लेकिन यह भी सच है कि दुनिया में जल संसाधन भरपूर मात्रा में हैं। हमें इसकी कमी होनी नहीं चाहिए। अगर जल संकट दिख रहा है तो इसकी वजह जीवनरक्षक संसाधन का सही प्रबंधन न होना है। हमें इसे सही करने पर ध्यान देना होगा।सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट (CSC) ने जल संरक्षण पर साल 1990 में ही शोध शुरू कर दिया था। हमारी एक टीम राजस्थान के रेगिस्तान पहुंची तो 'उलटी उड़न तश्तरी' जैसी चीजें देखीं, तब पता चला कि वह जल संचयन के लिए तैयार किया गया ढांचा था। जितनी भी बारिश होती उसका पानी जमीन के नीचे बने कुएं में जमा होता था। विज्ञान अद्भुत होता है, एक हेक्टेयर जमीन आपको हजारों-लाखों लीटर पानी दे सकती है, यहां तक कि जैसलमेर में भी ऐसा हो सकता है। हालांकि वह दुनिया की सबसे सूखी जगहों में से एक है। वहां साल में सिर्फ 50 मिलीमीटर बारिश होती है, लेकिन हर बूंद को बचाने की वजह से यह तरोताजा रहता है।

हमारी किताब डाइंग विज्डम (Dying Wisdom) ने भारत के हर इलाके के बारे में जानकारी दर्ज की है। ब्रिटिश गैजेट से भी जानकारी ली। उस वक्त पानी जमा करने के अनूठे तरीके थे। वे सब बारिश और सामुदायिक मदद से प्रयोग में लाए जाते थे। लद्दाख में जिंग, बिहार में आहर पइन, मेघालय में बांस की ड्रिप सिंचाई, केरल में जल संचयन से सिंचाई, तमिलनाडु में झरने वाले टैंक। हर इलाके में बारिश का महत्व समझा गया था। जब ब्रिटिश भारत में आए तो यह सिस्टम खत्म होने लगा। उन्होंने वैज्ञानिक विविधता वाले सामुदायिक स्तर पर हो रहे पानी के प्रबंधन को नहीं समझा। उन्होंने इसे नहरों और पानी का बहाव मोड़ने की प्रणाली से बदल दिया। पानी समुदायों के हाथ से निकल गया और ब्यूरोक्रेसी को दे दिया गया कि वे इसका प्रबंधन कर लें।

आजादी के बाद भी यही सिस्टम चलता रहा और प्राचीन ज्ञान मिटता रहा। हमारी किताब लिखे जाने तक यह ज्ञान खोया हुआ था। इस शोध के बाद चीजें बदली और आज मनरेगा कार्यक्रम में बहुत-से गांवों में पानी का प्रबंधन पुनर्जीवित हो रहा है। इस विज्ञान को बचाना बहुत बड़ी मदद है क्योंकि उन लोगों को कुदरत के साथ जीना आता था। यह उपनिवेशवादी सोच से अलग है जो कुदरत पर कब्जा जमाती है। बिहार बाढ़ संभावित इलाका माना जाता है, पर वहां बाढ़ के पानी के मैनेजमेंट का बहुत शानदार तरीका विकसित कर लिया था। बंगाल में अकाल के दौरानएक ब्रिटिश इंजीनियर विलियम विलकॉक्स ने बिहार में देखा कि अंग्रेज शासक ऐसा कुछ भी नहीं कर सकते जो बिहार के प्राचीन सिस्टम से अच्छा हो। पर उनकी सलाह पर तवज्जो नहीं दी गई। उन्हें कानी नदी मिली, ऐसी नहरें जो बाढ़ के पानी की धारा मोड़ सकती थीं और उसे दूर तक पहुंचा सकती थीं। बाढ़ के दिनों में लोग इस पानी पर निर्भर होते थे। वह पानी तालाब, झीलें मखाने या कमल के बीज के उत्पादन, मछलियां पालने और गेहूं की किस्में उगाने के काम आता। लेकिन वक्त के साथ ये नहरें फिजूल लगने लगीं। बाढ़ के पानी से नदियों में गाद भरने लगी और उनकी सतह आसपास के इलाकों से ऊंची होने लगी। इससे वहां बाढ़ का खतरा पहले से ज्यादा बढ़ गया।

अब हमें कुदरत के साथ रहना है तो उसका आदर करना सीखना होगा। मैं बड़े बांध बनाने के खिलाफ नहीं हूं लेकिन उससे ज्यादा फायदा जल संचयन के ढांचे बनाने से होगा।

'हम अगर खेती का तरीका बदलें तो पानी लगेगा कम'

उपमन्यु लाल अमेरिका की कोलंबिया यूनिवर्सिटी में धरती और पर्यावरण इंजीनियरिंग पढ़ाते हैं। यहां वह बता रहे हैं कि भारत के जल संकट को कैसे कम किया जा सकता है:

मेरे शोध का केंद्र यह समझना है कि दुनिया में पानी कैसे बचाया जाए। अध्ययन बताता है कि हम जल संकट से गुजर रहे हैं लेकिन हमने इसे जलवायु परिवर्तन के स्तर तक नहीं समझा। साल 2000 की शुरुआत में मैंने दुनियाभर के जल संकट वाले इलाकों पर शोध शुरू किया- भारत इस लिस्ट में सबसे ऊपर था। अब यह देखें कि खेती में पानी का जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल किया जाना भी गंभीर समस्या है। जल संसाधनों में घुल रहे प्रदूषण की जांच भी नहीं होती और बाढ़ साल में करोड़ों रुपयों का नुकसान कर देती है। कोई भी देश जल संकट का इस तरह सामना नहीं करता। हालांकि दूसरे देशों को भी समस्या होती है जैसे, अमेरिका, यूरोप और जापान। बांध और दूसरे स्रोत पिछले 50 से 100 साल के बीच बने हैं। अब पानी की कमी इसलिए महसूस हो रही है क्योंकि फैसले करने वाले लोग सिर्फ पीने के पानी के बारे में सोचते हैं। दूसरे कामों के लिए पानी जमा करने की व्यवस्था नहीं है, लोग बारिश पर निर्भर रहते हैं। दुनियाभर में खेती के लिए 70 फीसदी मीठे पानी का इस्तेमाल होता है, भारत में यह 90 फीसदी है। खेती करनी है तो धान को 2 से 3 इंच तक पानी में डुबोते हैं, पूरा खेत पानी में डूबा रहता है और वही पानी भाप बनकर उड़ता रहता है। वहां 60 से 70 सेंटीमीटर पानी से काम चल सकता है लेकिन एक यूनिट एरिया में 2.3 मीटर पानी इस्तेमाल किया जाता है। अधिकतर भारतीय शहर भूजल का इस्तेमाल करते हैं, जबकि खेती में ज्यादा पानी इस्तेमाल करने से इसका स्तर नीचे गिर रहा है। इसलिए पंप चलाए जाते हैं। हमने एक प्रयोग किया और 1200 किसानों को अपने साथ जोड़ा। हमने पाया कि ज्यादा पानी की खपत वाली फसलों में भी तकनीक की मदद से पानी कम इस्तेमाल होने लगा। उपज पर भी असर नहीं पड़ता। इससे भी हम 30 फीसदी पानी का खर्च बचा सकते हैं।